महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तावित शिक्षा प्रणाली को "बुनियादी शिक्षा" कहा जाता है। उन्होंने मुख्य रूप से मातृभाषा में शिक्षा का लक्ष्य रखा और बच्चों को कुशल और स्वतंत्र बनाने के लिए गतिविधि केंद्रित शिक्षा के लिए कहा। गांधीजी अपने आदर्श नागरिकों के साथ छोटे, आत्मनिर्भर समुदायों का निर्माण करना चाहते थे, जो सभी सहकारी, स्वाभिमानी और एक छोटे से सहकारी और समुदाय में रहने वाले उदार व्यक्ति थे। उनकी इच्छा थी कि कुछ स्थानीय शिल्प को बच्चों के लिए शिक्षा का माध्यम बनाया जाए ताकि वे अपने मन, शरीर और आत्मा का सामंजस्यपूर्ण तरीके से विकास करें और उनके भावी जीवन की जरूरतों को भी पूरा कर सकें। ऐसे गांधीवादी शैक्षिक विचार विकास के लिए

Scanned with CamScanner

गांधी के शैक्षिक विचार

गांधीजी की मूल शिक्षा उनके शिक्षा के दर्शन का व्यावहारिक अवतार थी। उनकी बुनियादी शिक्षा युवा शिक्षार्थियों को नैतिक रूप से स्वस्थ, व्यक्तिगत रूप से स्वतंत्र, सामाजिक रूप से उत्पादक और जिम्मेदार भविष्य के नागरिक बनने के लिए तैयार करने का चुनौतीपूर्ण कार्य करती है, जो उन्हें कौशल प्रदान करके युवाओं को स्वरोजगार देकर बेरोजगारी की समस्या को हल करने में मददगार साबित हो सकती है। प्रशिक्षण। गांधीजी का मानना था कि शिक्षा से बच्चे की सभी क्षमताओं का विकास होना चाहिए ताकि वह एक पूर्ण मानव बन जाए। इस तरह, पूरी तरह से और सामंजस्यपूर्ण रूप से विकसित व्यक्तित्व जीवन के अंतिम उद्देश्य को महसूस करने में सक्षम है जो सत्य या ईश्वर है। गांधीजी ने स्वयं समझाया है - "शिक्षा के द्वारा मेरा मतलब है कि बच्चे और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा में सर्वश्रेष्ठ का सर्वांगीण चित्रण। साक्षरता न तो शिक्षा का प्रारंभ है और न ही अंत है। यह केवल एक साधन है जिसके माध्यम से पुरुष या महिला। शिक्षित बनिए।" शिक्षा के उनके मूल सिद्धांतों में शामिल हैं: -

1. सात से चौदह वर्ष की आयु तक, प्रत्येक बच्चे की शिक्षा मुफ्त, अनिवार्य और सार्वभौमिक होनी चाहिए।
2. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए।
3. महज साक्षरता को शिक्षा से समान नहीं किया जा सकता। शिक्षा को कुछ शिल्प को शिक्षा के माध्यम के रूप में नियोजित करना चाहिए ताकि बच्चा अपने जीवन के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता हासिल कर सके।

Scanned with CamScanner

4. शिक्षा से बच्चे में मानवीय मूल्यों का विकास होना चाहिए।
5. शिक्षा को उपयोगी, जिम्मेदार और गतिशील नागरिक बनाना चाहिए। शिक्षा के द्वारा बच्चे की सभी छिपी हुई शक्तियों का विकास उस समुदाय के अनुसार होना चाहिए जिसका वह अभिन्न अंग है।
6. शिक्षा को बच्चे के शरीर, मन, हृदय और आत्मा के सामंजस्यपूर्ण विकास को प्राप्त करना चाहिए।
7. सभी शिक्षा कुछ उत्पादक शिल्प या उद्योग के माध्यम से प्रदान की जानी चाहिए और उस उद्योग के साथ एक उपयोगी सहसंबंध स्थापित किया जाना चाहिए। उद्योग ऐसा होना चाहिए कि बच्चा व्यावहारिक कार्य के माध्यम से लाभकारी कार्य अनुभव प्राप्त करने में सक्षम हो।
8. कुछ उत्पादक कार्यों के माध्यम से शिक्षा को स्वावलंबी बनाया जाना चाहिए। शिक्षा से आजीविका के लिए आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता पैदा होनी चाहिए।

इस प्रकार, गांधीजी के शैक्षिक विचारों में बच्चे के व्यक्तित्व का विकास मात्र साक्षरता या विभिन्न विषयों के ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण है। दूसरे शब्दों में, वह जीवन-केंद्रित होने के साथ-साथ बाल-केंद्रित शिक्षा पर भी विश्वास करता था। स्कूल में थ्री आर रीडिंग, राइटिंग और अंकगणित की शिक्षा के अलावा, उन्होंने इन एच के हैंड, हार्ट और हेड के विकास पर जोर दिया। इस प्रकार, शिक्षा का उद्देश्य बच्चे के एकीकृत व्यक्तित्व को विकसित करना होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

गांधीजी के विचार में स्पष्टता थी कि शिक्षा के मूल सिद्धांतों में से एक यह है कि काम और ज्ञान को कभी अलग नहीं किया जाना चाहिए। सामाजिक अन्याय में श्रम के परिणाम से सीखने को अलग करना। गतिशील समाजों में, शिक्षा को बदलती परिस्थितियों के अनुकूल होने के लिए आवश्यक कौशल और दृष्टिकोण के साथ व्यक्तियों को लैस करना पड़ता है, और सामाजिक परिवर्तन के कार्य में रचनात्मक भागीदारी के लिए। यह युवाओं में निराशा, अवसाद, चिंता और आत्महत्या करने की भावना को हल करने में मददगार साबित हो सकता है।

गांधीजी के अनुसार शिक्षा के माध्यम से एक बच्चे को कुछ उद्योग या व्यवसाय अपनाकर जीवन की भावी जरूरतों को पूरा करने के लिए एक उत्पादक शिल्प सीखने में सक्षम होना चाहिए। इसलिए, उन्होंने शिक्षा के मुख्य उद्देश्य के रूप में आत्मनिर्भरता और किसी की आजीविका कमाने की क्षमता के लिए शिक्षा की वकालत की। इस उद्देश्य से उन्होंने बच्चे को एक मज़दूर बनाने का मतलब बनाया, लेकिन कामना की कि प्रत्येक बच्चा सीखने में लगे रहें और कुछ सीखने को प्राप्त करें क्योंकि वह कमाई में व्यस्त है। उन्होंने वकालत की कि व्यावसायिक शिक्षा के साथ-साथ सांस्कृतिक उन्नति भी हासिल की जानी चाहिए। विकास के दो पहलू साथ-साथ चलने चाहिए।

Scanned with CamScanner

गांधीजी ने जोर देकर कहा कि शिक्षा को व्यक्ति के सभी पहलुओं को सामंजस्यपूर्ण रूप से विकसित करना चाहिए। उनका यह भी मानना था कि शिक्षा का अनिवार्य उद्देश्य नैतिक विकास या चरित्र विकास है। गांधीजी की इच्छा है कि प्रत्येक बच्चे को स्वयं में ईश्वरत्व का एहसास कराते हुए एक दिव्य मानव के रूप में विकसित होना चाहिए। गांधीजी खुद लिखते हैं। "स्वयं का विकास करना चरित्र का निर्माण करना है और स्वयं को पूर्णता और ईश्वरत्व की प्राप्ति के लिए तैयार करना है।

गांधीजी की based बुनियादी शिक्षा 'नौकरी केंद्रित थी, मूल्य आधारित और बड़े पैमाने पर उन्मुख। यहां यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि ये अभी भी हमारे देश में शिक्षा की महत्वपूर्ण आवश्यकताएं हैं। शिक्षा की उनकी योजना में, ज्ञान गतिविधि और व्यावहारिक अनुभवों से संबंधित होना चाहिए। इसलिए उनका पाठ्यक्रम गतिविधि केंद्रित है। इसका उद्देश्य बच्चे को व्यावहारिक कार्य के लिए तैयार करना, प्रयोगों का संचालन करना और अनुसंधान करना है ताकि वह खुद को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से विकसित कर सके और समाज का एक उपयोगी सदस्य बन सके। इस गतिविधि-केंद्रित पाठ्यक्रम में, गांधीजी ने मातृभाषा, बुनियादी शिल्प, अंकगणित, समाजशास्त्र, सामान्य विज्ञान, कला, संगीत और अन्य विषयों को शामिल किया। उन्होंने आगे कहा कि कक्षा 1 से 5 तक के लड़कों और लड़कियों के लिए पाठ्यक्रम समान होना चाहिए। उसके बाद लड़कों को कुछ क्राफ्ट सिखाया जाना चाहिए और लड़कियों को होम-साइंस की पढ़ाई करनी चाहिए। यह ध्यान

Scanned with CamScanner

दिया जाना चाहिए कि गांधीजी की बेसिक शिक्षा की योजना केवल प्राथमिक और कनिष्ठ चरणों तक ही सीमित है।

गांधीजी ने यह भी जोर देकर कहा कि प्राथमिक शिक्षा के लिए उनकी योजना में "स्वच्छता, स्वच्छता, पोषण के प्राथमिक सिद्धांत" के अलावा "संगीतमय ड्रिल के माध्यम से अनिवार्य शारीरिक प्रशिक्षण" शामिल होंगे। गांधीजी का तर्क है कि उनकी योजना छात्रों को उनके माता-पिता और उनके माता-पिता के लिए मजबूत, आत्मविश्वास और उपयोगी बनाती है। देश। गांधीजी कहते हैं कि उनकी प्रणाली से सांप्रदायिक सद्भाव बढ़ेगा क्योंकि यह सभी के लिए समान होगा; यह "व्यावहारिक धर्म, स्वयं सहायता का धर्म" होगा।

गांधीजी ने शिक्षा के तरीकों को समझने में रोष प्रकट किया और इसे दोषपूर्ण माना और शिक्षा के साधन के रूप में शिल्प और व्यवसाय बनाने पर जोर दिया। उन्होंने कामना की कि कुछ स्थानीय शिल्प को बच्चों के लिए शिक्षा का माध्यम बनाया जाए ताकि वे अपने शरीर, मन और आत्मा का सामंजस्यपूर्ण तरीके से विकास करें और उनके भावी जीवन की जरूरतों को पूरा कर सकें। इस तरह, गांधीजी की शिक्षा पद्धति इसलिए वर्तमान से भिन्न थी। उन्होंने अपने शिक्षण की विधि में निम्नलिखित सिद्धांतों के महत्व पर जोर दिया: -

1. मानसिक विकास प्राप्त करने के लिए, इंद्रियों और शरीर के कुछ हिस्सों का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
2. पढ़ना लिखना सिखाने से पहले होना चाहिए।
3. करने के लिए सीखने के लिए और अधिक अवसर दिए जाने चाहिए।
4. अनुभव द्वारा सीखने को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

Scanned with CamScanner

5. सहसंबंध शिक्षण विधियों और सीखने के अनुभवों में स्थापित किया जाना चाहिए।

Scanned with CamScanner